Volume-6, No. 2 Aug.-2019, pp. Hin.41-43

भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर–संस्कृत

श्री लक्ष्मण सिंह,
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अनूपशहर,बुलंदशहर उत्तर प्रदेश भारत।

सारांश
संस्कृतभाषा से तात्पर्य एक ऐसी भाषा से है जो शुद्ध हो,परिष्कृत हो, दोषरहित और गुणयुक्त हो। व्यापक दृष्टिकोण से देखने पर सही प्रकार से किया गया संसार का प्रत्येक कार्य संस्कृत है। इसे देवभाषा, देववाणी, सुरभाषा और सुरवाणी इत्यादि नामों से जाना जाता है। विश्व के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद की भाषा होने के कारण संस्कृत को संसार की प्राचीनतम भाषा माना जाता है। भारतीय मनीषियों के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के प्रारंभ में ही परम पिता परमात्मा ने मानव के वाग्व्यवहार हेतु संस्कृत भाषा की रचना की। संस्कृत में प्रयुक्त विभिन्न सुभाषित मानव जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करके, कठिनाइयों और दुर्गुणों को हटाकर, बंधुता,तप,त्याग,सत्य इत्यादि उत्तम भावनाओं के साथ सतत सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

मुख्य शब्द–संस्कृतभाषा, परमात्मा, आत्मज्ञान, प्राणतत्व।

भूमिका–त्रिमुनि पाणिनि ,कात्यायन और पतंजलि द्वारा संस्कारित और संवर्धित संस्कृतभाषा विश्व की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नही हुआ है। संस्कृत पद का अर्थ शुद्ध,परिष्कृत और परिमार्जित इत्यादि होता है। इस प्रकार संस्कृतभाषा से तात्पर्य एक ऐसी भाषा से है जो शुद्ध हो,परिष्कृत हो,दोषरहित और गुणयुक्त हो। व्यापक दृष्टिकोण से देखने पर सही तरीके से किया गया संसार का प्रत्येक कार्य संस्कृत है। इसे देवभाषा,देववाणी,सुरभाषा और सुरवाणी इत्यादि नामों से जाना जाता है। विश्व के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद की भाषा होने के कारण इसे संसार की प्राचीनतम भाषा माना जाता है। संसार की अनेकों भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृतभाषा से मानी गई है। हिंदी,गुजराती,मराठी इत्यादि भारतीय भाषाएँ संस्कृत से ही उत्पन्न है। हिंदी में प्रयुक्त सभी तत्सम शब्द संस्कृत के ही हैं। नवीन वस्तुओं के ज्ञान हेतु हिंदी के शब्दों की आवश्यकता पूर्ति की सामर्थ्य संस्कृतभाषा में ही है। जिसका उदाहरण बवउचनजमत के लिए संगणक शब्द का प्रयोग है।संस्कृत की महत्वपूर्ण विशेषता इसमें जैसा बोला जाता है। वैसा ही सुना जाता है ।जैसा सुना जाता वैसा ही लिखा जाता है। भारतीय मनीषियों के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के प्रारंभ में ही परम पिता परमात्मा ने मानव के वाग्व्यवहार हेतु संस्कृत भाषा की रचना की। विश्व की सभी भाषाओ में संस्कृत की दिव्यता और मधुरता का डिंडिमनाद करता हुआ निम्न श्लोक प्रसिद्द है।

संस्कृतनाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती ।।

संस्कृत वाङ्मय–
संस्कृत में वेद पुराण, उपनिषद, इतिहास, भूगोल, दर्शन, आरण्यक, रामायण, महाभारत, सामाजिकविज्ञान, नीतिशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, गणितशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, खगोलशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, विमानशास्त्र, रसायनशास्त्र और भौतिकशास्त्र इत्यादि मानव जीवनोपयोगी ज्ञान का समृद्ध भंडार निहित है। जिस समय संसार के प्रायः सभी देशों के निवासियों ने स्थायी निवास बनाकर रहना भी शुरू नहीं किया था, उस समय भारतीय ऋषियों की मनीषा विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के अन्वेषण में लगी हुई थी।सृष्टि के प्रारंभिक समय में ईश्वर की प्रेरणा से ऋषियों के द्वारा प्रदत्त वेद–ज्ञान हमें इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहार करने का अलौकिक उपाय बतलाता है। संसार के आत्मा, परमात्मा, जीवात्मा, ब्रह्म और प्राण इत्यादि विषयक गूढ प्रश्नों का उत्तर हमारे ऋषियों के द्वारा उपनिषद ग्रंथो में "अहं ब्रह्मास्मि" "तत्त्वमसि" इत्यादि वाक्यों द्वारा हजारों साल पूर्व ही दिया जा चुका है। त्रेतायुग

में तमसा के तीर पर घूमते हुए व्याध द्वारा मारे गए क्रौंच पक्षी के साथी के करुण क्रंदन को सुनकर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के ह्रदय में उत्पन्न शोक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के पतितपावन जीवनचरित का आश्रय लेकर संस्कृ तभाषा में श्लोक रूप में परिणत होकर चिरकाल से 'जब तक पृथ्वी पर नदियाँ और पर्वत रहेंगे तब तक रामायण की कथा का संसार में प्रचार–प्रसार होता रहेगा' इस शंखनाद को कर रहा है।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावत् रामायणीकथा लोके प्रचरिष्यति ।।

द्वापरयुग में कुरुक्षेत्र की भूमि पर हुए कौरव और पांडवो के युद्ध को वर्णित करता हुआ,महर्षि कृ ष्णद्वैपायन वेदव्यास द्वारा रचित शतसाहस्रीसंहिता महाभारत अपनी विशालकाय आकृति की दृष्टि से और विभिन्न विषय वर्णन की दृष्टि से अपनी कीर्तिपताका को दिग–दिगन्त में फैलाता हुआ विश्व–साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसमें मानव जीवन के कल्याण हेतु आवश्यक संसार के विभिन्न विषयों का समावेश है।

महाभारत के विषय में स्वयं वेदव्यास जी कहते हैं कि–

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तदन्यत्र ।।

संसार की प्रायः सभी भाषाओं में अनूदित होकर संस्कृतानुरागियो को गौरवान्वित करने वाला, महाभारत के भीष्मपर्व में कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में निराश,हताश, उदास अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा स्वकर्तव्य पालन की शिक्षा देते हुए दिया गया गीता–ज्ञान विश्व मानव समुदाय को अपने कर्त्तव्यों के पालन के साथ जीवन जीने की कला सिखाता है। जिसका यह संसार सहर्ष अनुसरण करता है ।और कहता है कि–

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिसृता ।।

संस्कृत में ज्ञान–विज्ञान– 600 ईसा पूर्व में संस्कृ त भाषा के प्रकाण्ड विद्वान प्रसिद्व शल्यचिकित्सक सुश्रुत ने अपनी रचना सुश्रुतसंहिता लिखकर शल्यचिकित्सा के विषय में संसार को अवगत कराया। मगध के प्रधानमंत्री आचार्य कौटिल्य द्वारा 375 ईसा पूर्व में संस्कृत भाषा में रचित अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में वर्णित राजनैतिक मार्ग का अवलंबन करने का प्रयास आधुनिक जगत के राजनेता भी करते हैं। 300 ईसा पूर्व में आचार्य चरक ने चरक संहिता की रचना कर औषधी विज्ञान के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। कविकुलगुरु कालिदास, भारवि,माघ और श्रीहर्ष इत्यादि महाकवियों ने संस्कृत–साहित्य को विश्व–साहित्य में उन्नत शिखर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दंडी ,सुबंधु और बाण इत्यादि ग।कारो ने भी सहृदय पाठक के ह्रदय को आह्लादित करने वाले,जीवन के यथार्थ स्वरूप को प्रकट करने वाले अपने ग।काव्यों द्वारा सहृदयी व्यक्तियों के मन में संस्कृतभाषा को चिरस्थायी रूप में प्रतिष्ठापित किया ।476 ई. में जन्मे पाटलिपुत्र के प्रसिद्द संस्कृत विद्वान् आर्यभट ने 'शून्य की खोज' की। 1530ईसवी में स्थापित कापरनिकस की अवधारणा पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केंद्र में नहीं है अपितु सूर्य ब्रह्माण्ड के केंद्र में है। इसी सिद्धांत को हजार साल पहले आचार्य आर्यभट 'पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है' इस रूप में वर्णित कर चुके हैं। सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण में राहू–केतु विषयक हिन्दू धर्म की मान्यता के स्थान पर इन्होंने "पृथ्वी और चंद्रमा की सूर्य के सापेक्ष स्थिति ही सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण में कारण होती है" इस सिद्धांत की स्थापना की।1857 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के उपरांत अभिव्यक्त हुई राजनीतिक और आर्थिक जागृति में राष्ट्रवाद की प्रखर भावना को प्रदीप्त करने का श्रेय विभिन्न संस्कृत–साधकों को जाता है।जिनमें महर्षि दयानंद सरस्वती ,स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद ,लोकमान्य तिलक और योगी अरविन्द प्रमुख हैं।

विभिन्न संगठनों के ध्येय वाक्य–

भारत के विभिन्न संगठन ध्येय वाक्य चयन हेतु सदा निर्मल प्रवाह वाली जीवंत भाषा संस्कृत की ओर ही उन्मुख होते हैं। भारत सरकार का ख्सत्यमेव जयते,,भारतीय थलसेना का ख्सेवा अस्माकं धर्मः,, भारत के उच्चतम न्यायालय का ख्यतो धर्मस्ततो जयः,, ख्ज्ञान–विज्ञानं विमुक्तये , विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इत्यादि संस्कृत भाषा से ग्रहण किये गए ये ध्येय वाक्य निश्चित रूप से मानव जीवन में बंधुता,तप,त्याग,सत्य इत्यादि उत्तम भावनाओं के साथ सतत उ।गरत रहकर उत्थान के लिए प्रेरित करते हैं एवं मनुष्य को वास्तविक अर्थों मंय मनुष्य ख्मननशील, बनने में सहायक होते हैं। हम अपने जीवन में इन ध्येय वाक्यों में से किसी भी वाक्य को ध्येय ख्लक्ष्य,उद्धेश्य,बनाकर सुख,समृद्धि,शान्ति और सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

संस्कृत सुभाषित–

जीवन में जब सकारात्मक ऊर्जा का अभाव प्रतीत हो तब संस्कृत ग्रंथों में ऋषि–महर्षियों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न सुभाषित कठिनाइयों और दुर्गुणों को हटाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं । 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'को समझने वाला दूसरे के साथ अनुचित व्यवहार में कभी तत्पर नहीं हो सकता है। कठोनिषद में उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत,का अध्येता लक्ष्यप्राप्ति पर्यंत परिश्रम करेगा ही, 'विद्या विनयेन शोभते' के भावार्थ को जानने वाला प्राप्त करके भी विनयपूर्वक व्यवहार करने की क्षमता रखता ही है।पूरी वसुधा को ही एक परिवार माननेख्वसुधैव कुटुम्बकं, के विस्तृत विचार को संसार के समक्ष संस्कृत भाषा प्रस्तुत करती है। संस्कृतभाषा सम्पूर्ण मानव समाज के लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः हमें संस्कृत के ग्रंथों में वर्णित महापुरुषों की मति ,उत्तमजनों की धृति और सामान्य जनों की जीवनपद्धति का अनुसरण करना चाहिए। राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ाने वाली, हमारे गौरवशाली अतीत को ज्ञात कराने वाली, भारत की ज्ञान–विज्ञान की परंपरा को प्रतिष्ठापित करने वाली,भारतीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने वाली और मानवीय गुणों का विकास करने वाली विश्व की सर्वाधिक मधुर,दिव्य और प्राचीनतम भाषा और हमारी अमूल्य धरोहर संस्कृत में चराचर जगत के समस्त प्राणियों के कल्याण की मंगलकामना कितने सुन्दर शब्दों में की गई है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भावेत् ।

निष्कर्ष–

इस प्रकार संस्कृत भाषा के साहित्य का सम्यक अवलोकन करके हम कह सकते हैं कि त्रिमुनि पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि द्वारा संस्कारित और संवर्धित संस्कृतभाषा विश्व की एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नही हुआ है। व्यापक दृ ष्टिकोण से देखने पर सही तरीके से किया गया संसार का प्रत्येक कार्य संस्कृत है। संस्कृत की प्राचीन ज्ञान परंपरा के बारे में कहा जा सकता है कि जिस समय संसार के प्रायः सभी देशों के निवासियों ने स्थायी निवास बनाकर रहना भी शुरू नहीं किया था, उस समय भारतीय ऋषियों की मनीषा विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के अन्वेषण में लगी हुई थी। अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा स्वकर्तव्य पालन की शिक्षा देते हुए दिया गया गीता–ज्ञान विश्व मानव समुदाय को कर्त्तव्य–पालन के साथ जीवन जीने की कला सिखाता है। संस्कृत भाषा में प्रयुक्त विभिन्न सुभाषित निश्चित रूप से मानव जीवन में बंधुता,तप,त्याग,सत्य इत्यादि उत्तम भावनाओं के साथ सतत उद्योगरत रहकर उत्थान के लिए प्रेरित करते हैं, अतः हमें संस्कृत के ग्रंथों में वर्णित महापुरुषों की मति ,उत्तमजनों की धृति और सामान्य जनों की जीवनपद्धति का अनुसरण करने के लिए राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ाने वाली, हमारे गौरवशाली अतीत को ज्ञात कराने वाली, भारतीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने वाली और मानवीय गुणों का विकास करने वाली विश्व की सर्वाधिक मधुर,दिव्य और हमारी अमूल्य धरोहर संस्कृत के संवर्धन और संरक्षण में अपनत्व की भावना के साथ संलग्न होना चाहिए इससे हमारी अपनी भाषा संरक्षित और संवर्धित होगी। इस प्रकार बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अगर सभी भारतवासी भारतीय संस्कृत की अमूल्य धरोहर को सरंक्षित और संवर्धित रखेंगे तो यह भाषा भारत को विश्व के अग्रणी देशों में शामिल करवाने में निश्चित रूप से सहायक और कामयाब होगी।

सन्दर्भ–

1. द्विवेदी कपिलदेव –संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास
2. श्रीमदभगवद्गीता
3. महर्षि वेदव्यास महाभारत
4. महर्षि वाल्मीकि –रामायण
5. सायण –ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
6. कठोनिषद्
7. ऐतरेयोपनिषद्
8. छान्दोग्योपनिषद्
9. इशोपनिषद्